प्रेस विज्ञप्ति

श्री हंसलोक आश्रम में 'आत्म-जागृति दिवस' के रूप में मनाई गई माताश्री राजेश्वरी देवी की पावन जयंती

नई दिल्ली। परमपूज्य श्री भोलेजी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के सानिध्य में श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली में माताश्री राजेश्वरी देवी की पावन जयंती 'आत्म जागृति दिवस' के रूप में मनाई गई। इस मौके पर हंस कल्चरल सेंटर द्वारा 8 व 9 अप्रैल को सायं 6 से 9 बजे तक दो दिवसीय विशाल सत्संग समारोह का आयोजन किया गया जिसमें देश-विदेश से हजारों श्रद्धालु-भक्त तथा संत-महात्मा शामिल हुए।

माताश्री मंगला जी ने श्रद्धालु-भक्तों को सम्बोधित करते हुए कहा कि माताश्री राजेश्वरी देवी दया, करुणा तथा वात्सल्य की ऐसी प्रतिमूर्ति थीं जिन्होंने अपना सारा जीवन अधयात्म ज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा लोगों के कल्याण में लगाया। उनकी दया छोटा-बड़ा तथा अमीर-गरीब सभी पर समान रूप से बरसती थी। एक बार जो भी मनुष्य समर्पण भाव से उनके सम्पर्क में आया माताश्री राजेश्वरी देवी ने सत्संग व अध्यात्म ज्ञान के द्वारा उसके जीवन को सुख, शांति और आनंद के खजाने से भर दिया। माताश्री राजेश्वरी देवी ने केवल भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के अनेक देशों में अध्यात्म ज्ञान का प्रचार-प्रसार कर लोगों के दिलों में आपसी प्रेम, शांति, एकता और सद्भाव का संचार किया।

माताश्री मंगला जी ने कहा कि आज हम सब मिलकर माताश्री राजेश्वरी देवी की पावन जयंती मना रहे हैं। यह जयंती हम सबके लिए आत्म जागृति का दिवस है क्योंकि उन्होंने सत्संग और अध्यात्म ज्ञान के द्वारा अनेकों लोगों की सोई हुई आत्मा को जगाकर उन्हें ईश्वर का भजन व धयान करने की प्रेरणा दी। माताश्री राजेश्वरी दीन-दुखियों, बेसहारा तथा जरूरतमंदों की सेवा करना बहुत ही पुण्य का कार्य मानती थीं। उन्होंने स्वयं भी दीन-दुखियों की हरसंभव सेवा-सहायता की तथा अपने भक्तों को भी परोपकार, सेवा तथा जनकल्याण के लिए प्रेरित किया। उन्होंने माताश्री राजेश्वरी देवी को भावपूर्वक नमन करते हुए उनसे प्रार्थना कि वे हमें भक्ति दें, शक्ति दें तथा अपना आशीर्वाद दें जिससे हम निरंतर उनके ज्ञान-प्रचार व जन सेवा के कार्यों को आगे बढ़ा सकें।

परमपूज्य श्री भोलेजी महाराज ने कहा कि मनुष्य जीवन अनमोल है, इसे व्यर्थ की बातों में नहीं गंवाना चाहिए बल्कि सद्गुरु महाराज से भगवान के सच्चे नाम को जानकर भजन-सुमिरण करके अपने जीवन का कल्याण करना चाहिए। उन्होंने माताश्री राजेश्वरी देवी के प्रिय भजन-**''अपनी हस्ती जो तेरे चरणों में मिटा देते हैं** तथा **'भाव का भूखा हूं मैं और भाव ही एक सार है''** भजन गाकर लोगों को भाव-विभोर कर दिया।

बी.के. त्यागी
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18 भाटी माइंस रोड,
छतरपुर, नई दिल्ली-110074, मो-9871888650